International Research Journal of Humanities, Language and Literature
Volume 4, Issue 9, September 2017 Impact Factor 5.401
ISSN: (2394-1642)
© Associated Asia Research Foundation (AARF) Publication
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

त्रिलोचन के जीवन और काव्य-संघर्ष की उभरती रेखाएँ

-डा० किरण कुमारी मिश्रा, प्रधानाचार्या, उच्च विद्यालय सह इंटर कॉलेज, राजपुर, रघुनाथपुर, सीवान, बिहार - 841504

त्रिलोचन को कवि बनाया उनके जीवन की परिस्थितियों ने, यही कारण है कि उन्होंने अधिकांश कविताओं में अपने ही जीवन-संघर्ष और परिवार का प्रतिपाद्य विषय बनाया है। शिक्षा, सामाजिक सम्बन्ध और ज्ञानात्मक संवेदना के विकास के साथ-साथ उनकी कविताओं की विषय वस्तु और शिल्प-शैली में विकास होता गया है। त्रिलोचन का मूल नाम वासुदेव सिंह है। शैक्षणिक उपाधि 'शास्त्री' से 'त्रिलोचन शास्त्री' के नाम से परिचित होने वाले कवि ने अपने लिए कोई उपनाम न चुनकर अपने संस्कृत गुरू के आशीर्वाद-स्वरूप दिए नाम 'त्रिलोचन' को ही स्वीकार किया। **(1)** क्रीड़ा प्रिय बालक की स्मरण-शक्ति और मेधा को पहचान कर ही संस्कृत गुरू श्री देवदत्त जी ने उसका नाम करण 'त्रिलोचन' किया और उसके साथ 'सिंह पदवी लिखने से मना किया। गुरूजी ने स्वयं अपनी 'तिवारी' पदवी का त्याग कर दिया था । **(2)** कवि त्रिलोचन की काव्य-सृजन-प्रतिभा को समझ कर ही श्री राधावल्लभ त्रिपाठी ने उनकी कविताओं में "स्मृति, मति और प्रज्ञा की जाग्रत अन्विति' से उनके कवि-नाम 'त्रिलोचन' और गके काव्य-लक्ष्य 'ऊँचा ए हाथ' को सार्थक सिद्ध किया है। 'स्मृति, मति और प्रज्ञा की जाग्रत अन्विति' के कारण त्रिलोचन, कविता के 'ऊँचा ए हाथ' वे ऊँचाईयाँ नापते हैं जो सहज गम्य नही है। **(3)** 'कविता मनुष्य की सृष्टि है। मनुष्य अपनी बुद्धि का उपयोग कर उसका उत्पादन करता है। काव्यशास्त्र के आचार्यों ने इस बुद्धि के तीन रूप माने है- स्मृति, मति और प्रज्ञा। अतिक्रांत (बीती हुई) बात का स्मरण करने वाली स्मृति है, वर्तमान का मनन करने वाली मति है तथा अनागत या आनेवाले का प्रज्ञान करने वाली प्रज्ञा है। मति का ही उपयोग कर कविता का उत्पादन करने वाले बहुतेरे है, स्मृति, मति और प्रज्ञा- तीनों का एक साथ उपयोग करने वाले बिरले है। मति वर्तमान का मनन करने वाली होने के कारण जिस चीज का उत्पादन करती है, उसमे तात्कालिकता रहती है, उसी ओर जल्दी ध्यान भी जाता है। त्रिलोचन की ओर बहुत समय तक साहित्य के मतिमान लोगों का ध्यान नहीं गया, तो इसका कारण यह भी हो सकता है कि ममता और प्रज्ञा तीनों से उत्पन्न

अर्थों की उसमें होने से, तत्काल ध्यान खींचने की ख्वी की कविता में नही है। **(4)** त्रिलोचन को अपने जीवन में आर्थिक अभाव और सामाजिक रूढ़ियों के साथ संघर्ष करते हुए आलोचकों के पूर्वाग्रह और प्रकाशकों की धनलोभी प्रवृत्ति से भी संघर्ष करना पड़ा।

नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल और त्रिलोचन प्रगतिशील काव्यान्दोलन के दूसरे चरण के कवि हैं। नागार्जुन ओर केदारनाथ अग्रवाल की प्रगतिशील कविताओं पर आलोचक पाठक और प्रकाशक की दृष्टि प्रारम्भिक रचनाओं से ही पड़ने लगी। हालांकि त्रिलोचन भी उनके साथ ही लिख रहे थे। 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादिन 'तारसप्तक' **(1943** ई०**)** के कवियों के समसामयिक होकर भी वे प्रयोगवादी मंच से बाहर रहकर अपनी कविताओं के कथ्य और शिल्प में नये-नये प्रयोग कर रहे थे। तीनों के कवि-व्यक्तित्व को सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की प्रगतिशीलता प्रयोगशीलता प्रभावित कर रही थी। राजनीति और साहित्य की राजनीति में त्रिलोचन अपने ने समकालीन कवि मित्रों से कुछ अलग अपनी पहचान बनाये हुए थे। अतः प्रयोगवादी और प्रगतिवादी काव्यान्दोलनों से सम्बद्ध कवियों के खेमे से बराबर त्रिलोचन बाहर रहे जबकि वे सच्चे अर्थों में प्रयोगशील और प्रगतिशील थे। प्रगतिवादी और प्रगतिशील कहे जाने वाले आलोचकों तक ने उनको प्रगतिशील कवियों की लिस्ट' से बाहर रखा। सन् **1950-54** ई० के बंच लिखित और 'उस जनपद का कवि हूँ' में संकलित अपनी कविता 'प्रगतिशील कवियों को नई लिस्ट निकली है' **(5)** में त्रिलोचन ने अपने कवि-व्यक्तित्व की इस विडम्बना को प्रकाशित किया है। आर्थिक अभाव, सामाजिक अन्धविश्वास और रूढ़ियों के बीच शिक्षा प्राप्त करने में भी उनको संघर्ष का सामना करना पड़ा था। उपने काव्य - 'धरती' में संकलित 'जीवन एक लघु प्रसंग' में उन्होंने अपने जीवन की इन विकट परिस्थितियों को नाटकीय संवादशैली चित्रित किया है। **(6)** जीवन के विकास की प्रतिकूल परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए त्रिलोचन शिक्षा-प्राप्ति के उच्च शिखर पर पहुँचने में असफल रहे। अंग्रेजी विषय लेकर स्नातकोत्तर अध्ययन प्रारम्भ करके वे सिर्फ **एम०ए०** की पूर्वार्द्ध परीक्षा में ही शामिल हो सके। संस्कृत, हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी भाषा की अच्छी जानकारी होने के कारण त्रिलोचन जीविकोपार्जन में दौड़-धूप करते हुए अध्ययन, अध्यापन अनुवाद, पत्रकारिता तथा शब्दकोश निर्माण जैसे कार्यों से सम्बर्द्ध रहते हुए वे विश्वविद्यालय स्तर के प्रवक्ता और अध्यक्ष पद तक पहुंच गये। फिर भी ये अपनी अधूरी शिक्षा की कसक को जीवनपर्यन्त महसूस करते रहे। यही कारण है कि कवीर उनके श्रद्धास्पद कवि रहे। त्रिलोचन अपने अग्रज कवियों में कालिदास तुलसीदास, कबीरदास, गालिब और सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के कृतित्व और व्यक्तित्व से प्रभावित रहे। स्वतंत्रता-संग्राम, गांधीजी के आदर्श, मार्क्स के विचारों और समाजवादी व्यवस्था में विश्वास के साथ वे शोषित जन और अपने साथ अपने जनपद को भी कभी अपने सुजन-क्षेत्र से बाहर नहीं रख सके। फिर भी आत्मप्रचार या किसी विचारधारात्मक प्रभामण्डल से अपने को त्रिलोचन ने तटस्थ ही रखा। यही कारण है कि वे अपने समकालीन प्रगतिशील और प्रयोगशील कवियों में वे अलग रेखांकित होते रहे। प्रकृति, कृषि, शोषित जन, जनपद, प्रेम, लोक-संस्कृति, जीवानानुभव सामाजिक अवस्था-व्यवस्था, भारतीय इतिहास, संस्कृति, सौन्दर्य, छन्द,

भाषा, राजनीति, साहित्य, साहित्यकार आदि से सम्बद्ध भावभूमियाँ त्रिलोचन की कविताओं में मिलती है यधा प्रसंग विषयवस्तु के अनुरूप उन्होंने उनका कहीं वर्णन, कहीं चित्रण और कहीं विम्बांकन विविध कार्य रूपों और शैली शिल्प में किया है। सर्वत्र उनकी दृष्टि प्रगतिशील और यर्थायवादी ही है। उनके काव्य का स्थायीभाव प्रेम और करूणा है। जन-जन के प्रति प्रेम, जनपद, जनभाषा, लोक संस्कृति के प्रति प्रेम तथा दीन-दुखी, शोषित, मानव के प्रति उनमें करुणा है। उनके जीवन-संघर्ष और काव्य-साधना की पृष्टभूमि में ही उनकी कविताओं के भाव-सौन्दर्य का सम्यक अध्ययन हो सकता है।

त्रिलोचन की प्रगतिशील लम्बी कविताओं के भावसौन्दर्य का विश्लेषण कविताओं की विविध भावभूमियों के आधार पर वर्गीकृत करके इस रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

त्रिलोचन की कविताओं की विविध भाव-भूमियाँ तथा उनकी प्रगतिशील लम्बी कविताओं का भाव-सौन्दर्य :

<u>आत्मपरक कविताओं का भाव सौन्दर्य -</u> अपने सम्बन्ध में मौखिक रूप से कुछ कहना जितना सहज है, उतना ही कठिन आत्मकथा', 'राम-कहानी' या आपबीती' घटनाओं पर कुछ लिखना है। इसमें आत्मप्रशंसा अथवा आत्महीनता के भाव के प्रकाशन का भय बना रहता है। महात्मा गांधी, पंडित जवाहर लाल नेहरू, देशरत्न डॉ राजेंद्र प्रसाद और पण्डित राहुल सांकृत्यायन की आत्मकथाएं भी आलोचको की टीका-टिप्पणी से बच न सकी हैं। कषि त्रिलोचन ने बड़ी निर्ममता और तटस्थता से अपनी कविताओं में अपनी पारिवारिक आर्थिक विनता, अंधविश्वास और सामाजिक रूढ़ियों के साथ अपनी फटेहाल दशा का भी चित्रण किया है। उनकी काव्य साधना, उनके कवि व्यक्तित्व, उनकी विचारधारा और उनके आर्थिक संकट पर उनके समसामयिक कवि, आलोचक जो अभी अभी साहित्यक सृजन में बकैयां के चलने का प्रयत्न कर रहे थे, उनके ही उत्तर में त्रिलोचन ने आत्मपरख कविताएं लिखीं। उन कविताओं में उनकी आत्महीनता या दीनता नहीं प्रकाशित हुई, बल्कि उनका आत्मविश्वास, विजयोल्लास और स्वाभिमान प्रकाशित हुआ है। उन कविताओं के शब्द लाक्षणिक और धवयात्मक हैं। व शब्दों के पारखी थे। वे संदर्भाचित शब्दों की योजना करते थे किसी ने कहा है कि भगवान की (कवि त्रिलोचन के संदर्भ में युवा पीढ़ी को कविता-पाठक, आलोचक ओर प्रकाशक) जिसपर कृपा होती है, उसका दूषण भी भूषण हो जाता हैं। वही त्रिलोचन थे जिनकी के प्रकाशक, पाठक और आलोचक नहीं थे या आलोचक के लिए उनकी कविताएँ चुनौती थी। वही त्रिलोचन समकालीन कविता युग में प्रगतिशील, यथार्थवादी और जनवादी कवियों में पुवापीड़ी का नेतृत्व करने लगे। ऐसी स्थिति में उनकी आत्मपरक कविताएं उनके जीवन संघर्ष और उसके बीच उनके विकसते लाल कमल कवि व्यक्तित्व का इजहार पेश काती है। उनके 'धरती' काव्य में संकलित 'जीवन का एक लघु प्रसंग' शीर्षक कविता बालक त्रिलोचन के पारिवारिक आर्थिक अभाव, अन्धविश्वास और

निरक्षरता, पर विद्यानुरागी बुआ और माँ के बीच पुस्तक खरीदने के पैसे के लिए संघर्षरत दिखलाती है। कवि त्रिलोचन अपनी राम कहानी शुरू करते हैं - 'तब मैं बहुत छोटा था/ कौन साल, कौन मास और कौन दिन था/ पह सबकुछ याद नहीं, जानता भी नहीं था पढ़ता था/ नाम और ग्राम लिखना आ गया था स्कूल का समय/ बहुत व्यंग्य बुआ के पास खड़ा मैं/ उससे किताबें नयी लेने के लिए पैसे माँग रहा था। **(7)** पैसे के अभाव और कुछ नासमझी से बुआ बच्चे का दूसरे से किताबें मांग लेने के कह रही थी ऐसी स्थिति में माँ कहने लगती है - रोज-रोज कहती हूँ/ पढ़ लिख कर क्या होगा, पढ़ना अब बन्द करो इसका, घर काम करे/ पढना हमारे नहीं सहता पर बात मेरी कौन यहां सुनता है/ **(8)** बुआ ने कहा- 'इस बच्चे को/ मैंने श्रद्धा, प्रेम से, निष्ठा से विद्या को दान दिया है/ जान बुझ कर दान कैसे फेर दूं, ऐसा कभी नहीं हुआ-/ विद्या माता हो अब इसको निरखें-परखें। रक्षा और पालन-पोषण करें। **(9)** कवि के स्पष्ट निर्भीक अपने सम्बन्ध में ऐसे कथन से उसके जीवन की पृष्टभूमि में बाधा-स्वरूप खड़े अर्थाभाव, अन्धविश्वास और अभिभाविका में विद्यानुराग के भाव सुन्दर ही लगते हैं 'उस जनपद का कवि हूँ' 'में संकलित जिन्लीचन है' **(10)** 'चीर भरा पाजामा' **(11)** तथा 'भीख माँगते उसी त्रिलोचन को देखा कल' **(12)** उनको आत्मपरक कविताएं है जिसमें उन्होंने अपने अतीत के जीवन संघर्ष, आलोचकों की कत्रक्तियों और अर्थाभाव का तटस्थता, निर्भिकता और नि: संकोच भाव से अवलोकन किया है। अपनी कविताओं में त्रिलोचन के प्रिय कवि 'निगला" ने ऐसे ही आत्मपरक कथन किये हैं।

<u>अग्रज कवियों से संबद्ध कविताओं का भाव सौंदर्य -</u> त्रिलोचन भारतीय काव्य संस्कृति और परम्परा के आदर्श अनुकरणीय तत्वों में विश्वास करते थे। स्मृति के कारण शिलोचन पाय के प्रति कृतज्ञता का भाव है, वे संस्कृत कवियों की उस परम्परा को लेकर चलते हैं, जहां कवि अपने से पहले के उन बड़े कवियों को प्रणाम करके ही रचना में प्रवृत्त होता थ। कालिदास और तुलसीदास दोनों के प्रति कृतज्ञता त्रिलोचन ने भाषित की है। **(13)** उनके काव्य दिगंत में संकलित 'तुलसी बाबा', 'काशी का जुलाहा' और 'गालिब' **(14)** त्रिलोचन के अपने अग्रज कवियों पर लिखी गयी कविताएँ हैं। गोस्वामी तुलसीदास के प्रति त्रिलोचन इसलिए कृतज्ञ हैं, क्योंकि उनसे ही उन्होंने भाषा का सरल-सहज प्रयोग सीखा था। इसीलिए उनकी राम भक्ति, कथन पद्धति आदि का प्रशस्तिगान करते हुए त्रिलोचन उनके प्रति नतमस्तक हैं। तुलसी बाबा, भाषा मैंने तुमसे सीखी/ मेरी सहज चेतना में तुम रमे हुए हो,/ कह सकते थे तुम सब कड़वी, मीठी, तीखी **(15)** धार्मिक रूढ़ियों को तोड़ने, ब्राह्मणों मुल्लों और मौलवियों को, उनके धार्मिक पाखंडों के लिए डॉटने-फटकारने तथा सूत काट कर कपडा बुनने और समाज की नग्नता को ढकने के कारण ही कबीर त्रिलोचन को प्रिय थे। ग़ालिब और उनको बोली को उन्होंने गैर नहीं माना- 'गालिब गैर नहीं हैं, अपनों से अपने हैं/ गालिब की बोली ही आज हमारी बोली है' **(16)** कवि नागार्जुन का रेखाचित्र खींचते हुए वे उनके कवि-व्यक्तित्व को इस प्रकार उजागर काते है- 'अपने दुख को देखा सबके ऊपर छाया/ आह पी गया, हसी गाय की ऊपर आई/ काँटों में कलिका गुलाब की भूपर आई/ भली भांति देखा किसने क्या खोया पाया। **(17)**

त्रिलोचन किसी राजनीतिक दल के प्रति प्रतिबद्ध नहीं थे। फिर भी वे भारतीय स्वस्थ आदर्श परंपरा, लोक संस्कृति और अपनी अनुभूति के प्रति ईमानदार थे।

सन्दर्भ

क्र.स.

1. वर्तमान साहित्य-सम्पादक से. रा. यात्री
   वर्ष **9**, अंक **11**, अगस्त **1992**
2. उपरिवत्
3. संपादक - गोविन्द प्रसाद - त्रिलोचन के बारे में वाणी प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण-**1994**
4. उपरिवत्
5. त्रिलोचन : संचयिता - संपादक - ध्रुव शुक्ल वाणी प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण - **2002**
6. त्रिलोचन : प्रतिनिधि कविताएँ - संपा. केदारनाथ सिंह, राजकमल - पेपर बैक दिल्ली दूसरी शक्ति
7. उपरिवत्
8. उपरिवत्
9. उपरिवत्
10. उपरिवत्
11. उपरिवत्
12. उपरिवत्
13. राधावल्लभ शास्त्री - त्रिलोचन के बारे में - संपा. गोबिन्द प्रसाद - ऊंचाएं हाथ और त्रिलोचन की कविता

14. त्रिलोचन - दिगन्त - राजकमल प्रकाशन -दिल्ली, राजकमल से पहली बार 2006

15. उपरिवत्

16. उपरिवत्

17. त्रिलोचन : संचयिता